आस्था एक महाशक्ति

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आस्था पत्थर को भगवान बना देती है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु में दृढ़विश्वास होना आस्था है। मन्दिर में पत्थर की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कर स्थापित कर देने के बाद वह पत्थर का टुकड़ा भगवान का रूप ले लेता है। वह मूर्ति न जाने कितने लोगों के आस्था का केन्द्र बन जाती है। भारत एक आस्थावान देश है। आस्था के बल पर यहां पर असंभव को भी सम्भव बना दिया जाता है। गुरू में ईश्वर का रूप देखा जाता है। आस्था के कारण ही गुरू पूजनीय होते हैं। मंत्रे, तीर्थे गुरूश्चैव, यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी। अर्थात मंत्र, तीर्थ और गुरू में जिसकी जैसी भावना होती है उसको वैसी सिद्धि प्राप्त होती है। मंत्र शब्दात्मक होते हैं। मंत्र का उच्चाण मन में किया जाता है। मंत्र के द्वारा दूसरों को प्रभावित किया जाता है। जिसके ऊपर मंत्र का प्रयोग किया जाता है उसको केवल श्रद्धा करनी पड़ती है। श्रद्धा के कारण ही वह अपने कष्ट से मुक्त हो जाता है। इसी प्रकार तीर्थ स्थलों का भ्रमण भी श्रद्धा के आधार पर होता है। यात्री तीर्थ स्थलों पर भगवान के चरणों में आस्था व्यक्त करने के लिए ही जाते हैं। उनके मन की सभी मनोकामनाएं तीर्थाटन से पूरी हो जाती हैं। तीर्थ यात्री सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर जगह–जगह मन्दिरों में जाकर पत्थर की मूर्ति को भगवान मानकर दर्शन करते हैं और अपनी पूर्ण निष्ठा व्यक्त करते हैं। इसी से उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है। इसी प्रकार गुरू के चरणों में यदि शिष्य पूरी आस्था के साथ जुटा रहता है तो उसे भी मुक्ति मिल जाती है। गुरू ही शिष्य को ईश्वर का ज्ञान करा देता है। इसलिए गुरू का इस संसार में बहुत महत्व है। बिना श्रद्धा के कुछ भी नहीं हो सकता। चुनाव के समय हम जनप्रतिनिधियों में विश्वास करके वोट देते हैं। हमारा यह विश्वास होता है कि यह व्यक्ति यदि जीतेगा तो क्षेत्र का विकास करेगा। सुख–दुःख में हमारा साथ देगा। विश्वास या श्रद्धा एक महाशक्ति है। किसी भी पर्व पर करोड़ों लोग एक स्थान पर इकट्ठा होकर स्नान ध्यान करते हैं। जैसे भारत में चार स्थान ऐसे हैं जहां पर कुम्भ लगता है – इलाहाबाद, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार। इन तीर्थ स्थानों पर करोडों यात्री गंगा में स्नान करके अपने अन्तःकरण को

शुद्ध करते हैं। उन्हें यह विश्वास होता है कि गंगा की निर्मल धारा में स्नान करने से जन्म–जन्मान्तर के पाप कट जाते हैं। इसीलिए लोग इन तीर्थों पर स्वतः स्फूर्ति प्रेरणा से वहां इकट्ठा होते हैं। सभी लोग विश्वास और आस्था के साथ धार्मिक भावना से पाठ–पूजा करते हैं। प्राणियों में सद्भावना, प्रेम, सौहार्द और भाईचारे का संदेश आस्था के द्वारा मिलता है। अज्ञान मिटना और ज्ञान होना सबसे बड़ी आस्था है। आत्मा में विश्वास होना चाहिए, कर्ता भाव नहीं होना चाहिए। मैं और मेरेपन का भाव सबसे बड़ा अज्ञान है। जब यह अज्ञान दूर हो जाता है तो आत्मा का प्रकाश प्रस्फुटित होता है।

हम जो चिन्तन करते हैं उसके प्रति समर्पित हो जाना दृढ़ संकल्प है। ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। मनुष्य के पास विकसित तन, मन और दृढ़ इच्छा है। यदि मनुष्य का संकल्प दृढ़ रहे तो वह किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जायेगा। कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया से वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। श्वास प्रक्रिया के समुचित करने से शक्ति बढ़ती है। भूत वर्तमान और भविष्य को समझने और जानने की शक्ति मनुष्य के पास है। ब्रह्मचर्य पालन के माध्यम से शक्ति का संतुलन कर वह इच्छा शक्ति को दृढ़ करता है। दृढ़ संकल्प शक्ति से एकाग्रता बढ़ती है। एक जगह चित्त होने से आनन्द की प्राप्ति होती है। नकारात्मकता दूर हो जाती है। सद्विचारोंवाला, परोपकारी, मानव कल्याण के लिये कार्य करने वाला व्यक्ति समाज सेवा में अपने को लगा देता है। दृढ़ संकल्पवान आगे बढ़ता है। जितने भी उद्योगपति है वे दृढ़ संकल्प के धनी हैं। सूचना क्रान्ति लाने में उद्योगपतियों ने कड़ी मेहनत की है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी दृढ़ संकल्प के धनी है। वे जिस लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हैं उसे प्राप्त करने के लिये जीजान से प्रयास करते हैं। उनके साथ 125 करोड़ देशवासियों की शक्ति कार्य करती है। अपने पड़ोसी देशों के साथ आंख से आंख मिला लेने की शक्ति उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिणाम है। दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ कार्य करते हुए भारत को एक नयी ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। दृढ़ संकल्प शक्ति के लिये कड़ी मेहनत, दूर दृष्टि और पक्का इरादा होना बहुत आवश्यक है।

कड़ी मेहनत का अर्थ है सही दिशा में पुरुषार्थ करना। मेहनत के साथ लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी प्राप्ति हो जाती है। जब लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं रहेगा तो किया गया प्रयास लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता और किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में ही मेहनत का अभ्यास शुरू कर देना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाता है तभी से यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। कक्षा दस तक आते–आते विद्यार्थी जागरूक हो जाता है। उसे आज्ञा क्या बनना है। उसी अनुसार विषयों का चयन करके परिश्रम प्रारंभ कर देना चाहिए। कक्षा बारह पास करते ही विद्यार्थी के सामने अनेक विकल्प खुले रहते है। इन विकल्पों का चुनाव बहुत सावधानी से करना चाहिये।